

पद १८

(राग: यमन - ताल: केहरवा)

श्री माणिकप्रभु । मम सद्गुरु जगत गुरु । सकलमतप्रभु
आदिगुरु ॥१॥ प्रथमरूप श्रीदत्त तुम्हीं हो । द्वितीयरूप श्रीपाद
तुम्हीं हो । तृतीयरूप नृसिंह गुरु ॥२॥ रघुवंशी श्रीराम तुम्हीं हो ।
यदुवंशी श्रीकृष्ण तुम्हीं हो । अत्र्यात्मज तुम कल्पतरु ॥३॥ वेद
तुम्हीं वेदांत तुम्हीं हो । शास्त्र तुम्हीं सिद्धांत तुम्हीं हो । अन्य चरण
किस हेतु धरूँ ॥४॥ कृष्णा और अमरजा तुम हो । गुरुगंगा औ'
विरजा तुम हो । करो कृपा मैं स्नान करूँ ॥५॥ सूर्य चंद्र दिग्पाल
तुम्हीं हो । ऊर्ध्व मध्य पाताल तुम्हीं हो । नमन तुम्हें किस ओर
करूँ ॥६॥ यंत्र तुम्हीं हा मंत्र तुम्हीं हो । जप-तप-साधन तंत्र तुम्हीं
हो । सिद्ध तुम्हीं यह सिद्ध करूँ ॥७॥